सही मायने में जज वही जो मूल्यों एवं न्याय के प्रति कटिबद्ध-न्यायमूर्ति पटनायक

माउण्ट आबू, २४ जून। सर्वोच्च न्यायालय के न्यायमूर्ति ए.के.पटनायक ने कहा कि न्यायिक प्रक्रिया से जुड़े लोगों में ज्ञान और नियम की जानकारी तो होती है परन्तु व्यावसायिक स्तर उतार नहीं पाते। सही मायने में वही जज है जो मूल्यों एवं न्याय के प्रति कटिबद्ध हो। वे ब्रह्माकुमारीज संस्था के ज्ञान सरोवर में न्यायविद प्रभाग द्वारा आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन को सम्बोधित कर रहे थे।

आगे उन्होंने का कि आज लोग धार्मिक आधार पर बंटे हुए है, सभी अपने-अपने धर्मों को अच्छा-अच्छा कहते रहते हैं। जब हमें सभी धर्मों की शिक्षाओं के बारे में नहीं बताया जाए तब तक हम उनकी खूबियों के बारे में नहीं जान पाते। उन्होने स्वामी विवेकानंद की चर्चा करते हुए कहा कि जब शिकागों की धर्मसभा में स्वामी जी ने श्रोताओं को भाईयों एवं बहनों को कहकर सम्बोधन करना लोगों को आश्चर्य में डालकर प्रफुल्लित कर दिया। ब्रह्माकुमारी संस्था एक महान आध्यात्मिक संगठन है और मैं इससे काफी लम्बे समय से जुड़ा हुआ हूँ। हमें इस संगठन को प्रोत्साहित करना चाहिए तथा इनके द्वारा सिखाई गई बातों को अपने जीवन में धारण करने की भी चेष्टा करनी चाहिए। आध्यात्मिकता ही हमें बताती है कि हम सभी एक ईश्वर की संतान हैं और इसीलिए यह संसार एक परिवार है और यही सत्य है।

जोधपुर से आये टैक्स प्रभाग के आयुक्तएम.एन.मौर्य ने कहा कि यह हम सभी के लिए महान अवसर है कि हम इतने उत्तम श्रेणी के सम्मेलन में भाग ले रहे हैं। बच्चे के सर्वांगीण विकास की जिम्मेवारी परिवार की होती है। मगर मुझे यह देखकर सुखद आश्चर्य होता है कि ब्रह्माकुमारी संस्थान संसार के हर वर्ग के लोगों का जीवन मूल्यों से संवारने का प्रयत्न अनेक वर्षों से करता चला आ रहा है। बचपन से ही मेरे मन में एक प्रश्न सदैव उठता रहा कि मैं कौन हूँ? तब मैं कहीं गुम हो जाता था। मुझे याद है कि बचपन में ही मैं माउण्टआबू एक टूरिस्ट के रूप में आया था। इसी संस्था ने मुझे बताया था कि मैं एक आत्मा हूँ और मुझे अपना ध्यान अपनी भृकुटी के मध्य केन्द्रित करना चाहिए। इस अभ्यास से मेरे जीवन में स्थिरता आई। आप सभी भी आने वाले दो दिनों में राजयोग के बारे में जानेंगे और उसके अभ्यास से आपके जीवन में भी स्थिरता का समावेश हो जाएगा।

विधि महाविद्यालय विशाखापट्नम की प्राचार्या डॉ.पी.श्रीदेवी ने कहा कि हम लोग अलग-अलग भूखण्डों में रहते हैं फिर भी हमारे बीच अनेक समानताएं हैं। हमें यह समझना होगा कि एक ईश्वर पिता की संतान होने के नाते पूरा विश्व हमारा परिवार ही है। मानवता ही सबसे बड़ा धर्म है। मानवता का धर्म अपनाकर हम वैश्विक एकता स्थापित कर पाएंगे। राजयोग हमें इसमें मदद देगा।

डॉ.रश्मि ओझा, विभागाध्यक्ष, विधि प्रभाग मुम्बई विश्व विश्वविद्यालय ने कहा कि स्वयं की एवं परमात्मा की सत्य पहचान का अनुभव ही आध्यात्मिकता है। हमें अपने परिवार के प्रति सोचने के साथ संसार के लिए तथा मानवता के प्रति भी गंभीरता पूर्वक विचार करना चाहिए। पूरा विश्व इस समय प्राकृतिक आपदाओं, ङ्घहसा व नैतिक मूल्यों के पतन के आघात से जूझ रहा है। केवल कानून बनाने से संसार को सुधारा नहीं जा सकता बल्कि जीवन में मूल्यों का समावेश करके ही सुधार लाया जा सकता है।

ब्रह्माकुमारी संस्था के न्यायविद प्रभाग के अध्यक्ष ब्र.कु.रमेश शाह ने कहा कि विज्ञान एवं आध्यात्मिकता के मेल से ही बेहतर विश्व का निर्माण हो सकता है। जल एवं वायु प्रदूषण से विश्व के पर्यावरण को क्षति तो पहुँच रही है लेकिन संकल्पों के प्रदूषण से सबसे अधिक हानि हो रही है। एक परमात्मा की सत्य पहचान से ही विभिन्न धर्मों, जातियों व भाषाओं में बंटे समाज को एक परिवार रूप में तब्दील किया जा सकता है।

प्रभाग के राष्ट्रीय संयोजक ब्र.कु.जयप्रकाश शर्मा, दिल्ली से पधारी ब्र.कु.पुष्पा तथा मुख्यालय संयोजिका ब्र.कु.लता ने भी सम्बोधित किया।

फोटो, २४ एबीआरओपी, १, २, ३, ४ कार्यक्रम का दीप जलाकर कार्यक्रम का उदघाटन करते अतिथि